Lyceum India Journal of Social Sciences | e-ISSN: 3048-6513
Peer-reviewed • Indexed • Open Access • Monthly Online Journal
Vol. 3, No. 10 | August 2026
DOI: 10.5281/zenodo.22084247

वैश्विक शांति के नए आयाम : अंतरराष्ट्रीय राजनीति में "सर्वे भवन्तु सुखिनः की भूमिका

डॉ. हिमांशु यादव[1]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एस पी एम कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज

सारांश

21वीं सदी में वैश्विक विकास की चुनौतियाँ जैसे गरीबीए असमानताए जलवायु परिवर्तन और वैश्विक अस्थिरताकृने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को एक समावेशी और सतत विकास मॉडल की आवश्यकता का अहसास कराया है। इसी संदर्भ में United Nations द्वारा प्रस्तुत सतत विकास लक्ष्य एक व्यापक वैश्विक एजेंडा के रूप में उभरे हैंए जिनका उद्देश्य 2030 तक एक न्यायपूर्णए समावेशी और सतत विश्व व्यवस्था की स्थापना करना है। यह शोध-पत्र भारतीय प्राचीन दार्शनिक अवधारणा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और SDGs के बीच अंतर्संबंध का विश्लेषण करता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का मूल भाव समस्त मानवता के सुखए स्वास्थ्य और कल्याण की कामना करना है, जो इसे एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत बनाता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि यह अवधारणा ैक्ळे के मूल सिद्धांतकृविशेषकर "किसी को पीछे न छोड़ना"कृके साथ गहराई से जुड़ी हुई है। शोध में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में पारंपरिक शक्ति-केन्द्रित दृष्टिकोण के स्थान पर एक नैतिक और मानवीय दृष्टिकोण की आवश्यकता हैए जिसे "सर्वे भवन्तु सुखिनः" प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है। यह अवधारणा SDGs 1 ;गरीबी उन्मूलन)ए SDGs 10 ;असमानता में कमी) और SDGs 16 ;शांति एवं न्याय) के साथ विशेष रूप से संबद्ध है। अंततः यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि भारतीय दार्शनिक विचार और SDGs परस्पर पूरक हैं जहाँ एक नैतिक आधार प्रदान करता हैए वहीं दूसरा उसे व्यावहारिक रूप देता है। इस प्रकारए दोनों का समन्वय एक अधिक समावेशीए न्यायपूर्ण और सतत वैश्विक व्यवस्था की स्थापना में सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द (**Keyword**)रू सतत विकास, लक्ष्य (SDGs)ए अंतरराष्ट्रीय संबंध, भारतीय दर्शन, वैश्विक कल्याण, सतत विकास

भूमिका (Introduction)

वैश्वीकरण के इस युग में, जहाँ राष्ट्र–राज्य परस्पर निर्भरता और जटिल अंतःक्रियाओं के जाल में बंधे हुए हैं, अंतरराष्ट्रीय राजनीति के पारंपरिक दृष्टिकोणों की सीमाएँ स्पष्ट रूप से सामने आने लगी हैं। 20वीं सदी के यथार्थवादी और उदारवादी सिद्धांतों ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया, किन्तु 21वीं सदी की चुनौतियाँ जैसे वैश्विक असमानता, पर्यावरणीय संकट, महामारी और मानवाधिकारों का उल्लंघन इन पारंपरिक प्रतिमानों से परे जाकर एक अधिक समग्र और नैतिक दृष्टिकोण की मांग करती हैं। इसी संदर्भ में, United Nation द्वारा 2015 में अपनाए गए Sustainable Development Goal वैश्विक शासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हैं। ये 17 लक्ष्य न केवल आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संरक्षण और संस्थागत सुदृढ़ता को भी समान महत्व

देते हैं। SDGs का मूल उद्देश्य "किसी को पीछे न छोड़ना" (Leave No One Behind) है, जो एक समावेशी और न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था की स्थापना की ओर संकेत करता है। यदि हम इस आधुनिक वैश्विक एजेंडा की तुलना भारतीय प्राचीन विचारधारा से करें, तो एक रोचक समानता उभरकर सामने आती है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जो कि उपनिषदों और वैदिक साहित्य में वर्णित एक सार्वभौमिक प्रार्थना हैकृमानवता के समग्र कल्याण की वकालत करती है। यह अवधारणा केवल व्यक्तिगत या सामुदायिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को एक नैतिक इकाई के रूप में देखने का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

भारतीय दार्शनिक परंपरा में यह विचार वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा से भी जुड़ा हुआ है, जिसका अर्थ है "पूरी पृथ्वी एक परिवार है।" यह दृष्टिकोण राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग, सह–अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान को प्राथमिकता देता है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में, यह एक वैकल्पिक प्रतिमान प्रस्तुत करता है, जो शक्ति और स्वार्थ के स्थान पर नैतिकता और सामूहिक कल्याण को केंद्र में रखता है। परंपरागत अंतरराष्ट्रीय राजनीति, विशेषकर यथार्थवादी दृष्टिकोण, यह मानता है कि राज्य अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए कार्य करते हैं और शक्ति संतुलन (Balance of Power) ही वैश्विक स्थिरता का आधार है। किन्तु यह दृष्टिकोण अक्सर वैश्विक असमानताओं और मानव कल्याण के प्रश्नों की उपेक्षा करता है। इसके विपरीत, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसी अवधारणाएँ एक ऐसे वैश्विक नैतिक ढांचे का प्रस्ताव करती हैं, जिसमें सभी राष्ट्रों और व्यक्तियों के कल्याण को समान महत्व दिया जाता है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य इसी वैचारिक अंतर्संबंध का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार भारतीय प्राचीन दार्शनिक अवधारणाएँ, विशेष रूप से "सर्वे भवन्तु सुखिनः", SDGs के लक्ष्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करती हैं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक वैकल्पिक, मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

इस अध्ययन में यह तर्क दिया गया है कि SDGs, विशेषकर गरीबी उन्मूलन (SDG 1), असमानता में कमी (SDG 10) और शांति एवं न्याय (SDG 16), भारतीय प्राचीन विचारधारा के मूल सिद्धांतों के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का आदर्श न केवल आर्थिक समृद्धि की बात करता है, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और शांति को भी समान महत्व देता है जो कि SDGs के मूल उद्देश्यों में शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध यह भी इंगित करता है कि भारत की विदेश नीति और वैश्विक मंचों पर उसकी भूमिका में इन प्राचीन विचारों का प्रभाव देखा जा सकता है। भारत द्वारा अंतरराष्ट्रीय सहयोग, जलवायु न्याय और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर अपनाई गई नीतियाँ इस बात का संकेत देती हैं कि प्राचीन दार्शनिक मूल्यों को आधुनिक कूटनीति में किस प्रकार समाहित किया जा सकता है।

अंततः, यह भूमिका इस व्यापक तर्क को स्थापित करती है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" केवल एक आध्यात्मिक या सांस्कृतिक आदर्श नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक और प्रासंगिक सिद्धांत है, जो 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकता है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में इस प्रकार के वैकल्पिक दृष्टिकोणों का समावेश न केवल सैद्धांतिक समृद्धि लाता है, बल्कि वैश्विक शासन को अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और मानवीय बनाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में सैद्धांतिक रूपरेखा किसी भी शोध का वह आधार होती है, जो उसके तर्क, विश्लेषण और निष्कर्षों को दिशा प्रदान करती है। प्रस्तुत शोध में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की भारतीय दार्शनिक अवधारणा को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ जोड़ते हुए एक समग्र और बहुस्तरीय सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाया गया है। यह रूपरेखा न केवल पश्चिमी अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतों जैसे यथार्थवाद और उदारवाद को सम्मिलित करती है, बल्कि सामाजिक–निर्माणवाद (Constructivism) तथा भारतीय दार्शनिक परंपरा को भी विश्लेषण के केंद्र में रखती है।

परंपरागत रूप से, अंतरराष्ट्रीय राजनीति को समझने के लिए यथार्थवाद (Realism) को एक प्रमुख सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार राज्य अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के प्रमुख अभिनेता होते हैं, जो अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए शक्ति और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में सहयोग सीमित होता है और नैतिकता की भूमिका गौण मानी जाती है। किंतु जब हम SDGs जैसे वैश्विक एजेंडा की ओर देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि केवल शक्ति–केन्द्रित दृष्टिकोण इन लक्ष्यों की व्याख्या करने में अपर्याप्त है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की अवधारणा, जो सभी के समग्र कल्याण की वकालत करती है, यथार्थवाद की इस संकीर्णता को चुनौती देती है और एक अधिक व्यापक, मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। इसके विपरीत, उदारवाद (Liberalism) अंतरराष्ट्रीय सहयोग, संस्थाओं की भूमिका और शांति की संभावनाओं पर बल देता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि राज्य परस्पर सहयोग के माध्यम से सामूहिक हितों को प्राप्त कर सकते हैं और वैश्विक समस्याओं का समाधान संभव है। इसी संदर्भ में United Nations जैसी संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, जो ैक्ळे को लागू करने और वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देने का कार्य करती हैं। उदारवादी दृष्टिकोण "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के उस आदर्श के निकट प्रतीत होता है, जिसमें समस्त मानवता के कल्याण को प्राथमिकता दी जाती है।

हालांकि, इस शोध के लिए सबसे उपयुक्त सैद्धांतिक आधार सामाजिक–निर्माणवाद (Constructivism) सिद्ध होता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति केवल भौतिक शक्ति या आर्थिक हितों से संचालित नहीं होती, बल्कि विचारों, मानदंडों और पहचानों द्वारा भी निर्मित होती है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" को यदि एक नैतिक मानदंड के रूप में देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि यह अवधारणा वैश्विक व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। इसी प्रकार, SDGs भी एक वैश्विक मानदंड के रूप में कार्य करते हैं, जो राज्यों के व्यवहार को अधिक समावेशी, न्यायपूर्ण और सतत बनाने की दिशा में प्रेरित करते हैं। इस प्रकार, ब्वदेजतनबजपअपेउ इस शोध को वह वैचारिक आधार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से भारतीय दार्शनिक विचारों और आधुनिक वैश्विक लक्ष्यों के बीच अंतर्संबंध को समझा जा सकता है। भारतीय दार्शनिक परंपरा इस सैद्धांतिक रूपरेखा को और अधिक गहराई प्रदान करती है। धर्म की अवधारणा, जो कर्तव्य, न्याय और संतुलन पर आधारित है, SDGs के उन लक्ष्यों के साथ मेल खाती है जो सामाजिक न्याय और संस्थागत सुदृढ़ता पर बल देते हैं। इसी प्रकार, वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत वैश्विक एकता और सहयोग की भावना को प्रकट करता है, जो SDG 17 के मूल में निहित है। इन दोनों अवधारणाओं के साथ "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का आदर्श मिलकर एक ऐसे नैतिक ढांचे का निर्माण करता है, जिसमें संपूर्ण मानवता के कल्याण को सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता है।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता का प्रश्न भी इस शोध की सैद्धांतिक रूपरेखा का एक महत्वपूर्ण अंग है। लंबे समय तक अंतरराष्ट्रीय राजनीति को शक्ति और हितों के संघर्ष के रूप में देखा गया, किंतु समकालीन युग में यह धारणा बदल रही है। अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि वैश्विक शांति, न्याय और सतत विकास के लिए नैतिक मूल्यों की अनदेखी नहीं की जा सकती। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इस संदर्भ में एक ऐसा नैतिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है, जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति को अधिक मानवीय और समावेशी बनाने की क्षमता रखता है।

अंततः, इस शोध की सैद्धांतिक रूपरेखा एक समेकित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें यथार्थवाद की सीमाओं को स्वीकार करते हुए उदारवाद और सामाजिक–निर्माणवाद के साथ भारतीय दार्शनिक परंपरा को जोड़ा गया है। यह समन्वित दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" केवल एक सांस्कृतिक या आध्यात्मिक आदर्श नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक और प्रासंगिक सैद्धांतिक आधार है, जो SDGs के माध्यम से व्यक्त वैश्विक कल्याण के लक्ष्य को समझने और उसे साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस प्रकार, यह रूपरेखा अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान करती है, जो शक्ति के साथ–साथ नैतिकता, सहयोग और मानव कल्याण को भी समान महत्व देती है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" का दार्शनिक विश्लेषण

भारतीय दार्शनिक परंपरा में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक नैतिक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित है। यह केवल एक प्रार्थना या धार्मिक मंत्र नहीं है, बल्कि एक गहन दार्शनिक दृष्टिकोण है, जो मानव जीवन, समाज और विश्व व्यवस्था के लिए एक समावेशी एवं सार्वभौमिक मूल्य–व्यवस्था प्रस्तुत करता है। इस वाक्य का मूल भाव हैकृ"सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी का कल्याण हो और कोई भी दुःखी न हो।" यह विचार मानव–केंद्रित नहीं, बल्कि समस्त जीव–जगत के कल्याण की कामना करता है, जो इसे एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत के रूप में स्थापित करता है।

इस अवधारणा की जड़ें वैदिक और उपनिषदिक साहित्य में निहित हैं, जहाँ मानव जीवन को केवल व्यक्तिगत सुख तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि उसे व्यापक सामाजिक और वैश्विक संदर्भ में देखा गया। यहाँ 'सुख' का अर्थ केवल भौतिक समृद्धि नहीं है, बल्कि मानसिक शांति, आध्यात्मिक संतुलन और सामाजिक न्याय का समन्वित रूप है। इस प्रकार, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक समग्र कल्याण (Holistic Welfare) की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जिसमें व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन को अत्यंत महत्व दिया गया है।

दार्शनिक दृष्टि से देखें तो यह अवधारणा भारतीय चिंतन की उस परंपरा को अभिव्यक्त करती है, जिसमें 'अहं' (स्वार्थ) के स्थान पर 'वयं' (सामूहिकता) को प्राथमिकता दी गई है। यह विचार स्पष्ट रूप से वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा से जुड़ा हुआ है, जो सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने का आग्रह करता है। इस परिप्रेक्ष्य में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" केवल एक नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि एक सामाजिक और वैश्विक व्यवस्था का आदर्श मॉडल बन जाता है, जहाँ सभी के हितों का समन्वय संभव हो सके।

इसके साथ ही, यह अवधारणा धर्म के सिद्धांत से भी गहराई से संबंधित है। भारतीय दर्शन में 'धर्म' का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि कर्तव्य, न्याय और संतुलन है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इसी धर्म के व्यावहारिक रूप को प्रस्तुत करता

है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति और संस्था का दायित्व है कि वह दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करे। इस प्रकार, यह अवधारणा नैतिक उत्तरदायित्व (Moral Responsibility) को व्यक्तिगत स्तर से उठाकर वैश्विक स्तर तक विस्तारित करती है।

यदि इसे समकालीन संदर्भ में समझा जाए, तो "सर्वे भवन्तु सुखिनः" सामाजिक न्याय, समानता और समावेशिता जैसे मूल्यों का दार्शनिक आधार प्रदान करता है। यह विचार इस बात पर बल देता है कि किसी भी समाज या विश्व व्यवस्था की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब विकास के लाभ सभी तक समान रूप से पहुँचें और कोई भी वर्ग उपेक्षित न रहे। इस दृष्टिकोण में निहित समावेशिता आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवाधिकारों के सिद्धांतों के साथ भी सामंजस्य स्थापित करती है। इसके अतिरिक्त, यह अवधारणा एक नैतिक वैश्वीकरण (Ethical Globalization) का भी संकेत देती है। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में जहाँ राष्ट्र अपने–अपने हितों की पूर्ति के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, वहाँ "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो सहयोग, सह–अस्तित्व और साझा जिम्मेदारी पर आधारित है। यह विचार न केवल संघर्षों को कम करने में सहायक हो सकता है, बल्कि एक स्थायी और न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में भी योगदान दे सकता है। दार्शनिक रूप से यह भी महत्वपूर्ण है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" केवल आदर्शवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यावहारिकता का भी समावेश है। यह हमें यह सिखाता है कि व्यक्तिगत और राष्ट्रीय हितों के साथ–साथ वैश्विक हितों का भी ध्यान रखना आवश्यक है। इस प्रकार, यह अवधारणा एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें आत्महित और परहित के बीच सामंजस्य स्थापित किया जाता है।

अंततः, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" को एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत के रूप में देखा जा सकता है, जो समय, स्थान और संस्कृति की सीमाओं से परे जाकर मानवता के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करता है। यह न केवल भारतीय दर्शन की गहराई को दर्शाता है, बल्कि आधुनिक विश्व की जटिल समस्याओं जैसे असमानता, हिंसा और पर्यावरणीय संकटकृके समाधान के लिए भी एक प्रासंगिक और प्रभावी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, यह अवधारणा अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक शासन के लिए एक नैतिक आधार के रूप में उभरती है, जो सतत विकास और वैश्विक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हो सकती है।

SDGs का अवलोकन

21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियाँकृजैसे गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षरण और सामाजिक अन्यायकृने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को एक साझा, समग्र और दीर्घकालिक विकास एजेंडा अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसी संदर्भ में United Nations द्वारा वर्ष 2015 में सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals & SDGs) को अपनाया गया, जो 2030 तक एक अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और सतत विश्व व्यवस्था के निर्माण का वैश्विक खाका प्रस्तुत करते हैं। SDGs, सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (MDGs) के उत्तराधिकारी के रूप में विकसित हुए, किन्तु उनकी तुलना में अधिक व्यापक, समावेशी और सार्वभौमिक प्रकृति के हैं। SDGs की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी समग्रता (Holistic Approach) है। ये केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संरक्षण और संस्थागत सुदृढ़ता को समान महत्व देते हैं। कुल 17 लक्ष्यों और 169 उप–लक्ष्यों (Target) के माध्यम से SDGs मानव जीवन के लगभग प्रत्येक पहलू को स्पर्श करते है चाहे वह गरीबी उन्मूलन हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हो, लैंगिक समानता हो या जलवायु

परिवर्तन से निपटना। इस दृष्टि से, SDGs एक बहुआयामी विकास प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं, जिसमें विकास को केवल ळक्च वृद्धि के रूप में नहीं, बल्कि मानव कल्याण और पर्यावरणीय संतुलन के साथ जोड़ा गया है।

SDGs का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है Leave No One Behind" (किसी को पीछे न छोड़ना)। यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचने चाहिए, विशेषकर उन लोगों तक जो आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक रूप से हाशिये पर हैं। इस प्रकार, SDGs समावेशिता (Inclusivity) और समानता (Equality) को अपने केंद्र में रखते हैं। उदाहरण के लिए, SDG 1 गरीबी के पूर्ण उन्मूलन की बात करता है, जबकि SDG 10 देशों के भीतर और देशों के बीच असमानताओं को कम करने पर जोर देता है। इसी प्रकार, SDG 16 शांति, न्याय और सशक्त संस्थाओं की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित करता है, जो किसी भी सतत विकास प्रक्रिया के लिए आधारभूत तत्व हैं।

यदि SDGs के दार्शनिक आयाम को समझा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि ये केवल नीतिगत लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि एक नैतिक वैश्विक एजेंडा (Moral Global Agenda) भी हैं। इनमें निहित मूल्यों जैसे मानव गरिमा, समान अवसर, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय जिम्मेदारी एक ऐसी वैश्विक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं, जो राष्ट्र–राज्य की सीमाओं से परे जाकर संपूर्ण मानवता के कल्याण की बात करती है। इस दृष्टि से, SDGs अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक नए प्रतिमान का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें सहयोग, साझेदारी और साझा जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी जाती है।

SDGs का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू उनकी सार्वभौमिकता (Universality) है। यह लक्ष्य केवल विकासशील देशों के लिए नहीं, बल्कि विकसित देशों के लिए भी समान रूप से लागू होते हैं। इसका अर्थ यह है कि सतत विकास की जिम्मेदारी केवल कुछ देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक साझा वैश्विक दायित्व है। इस संदर्भ में, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझेदारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, जिसे SDG 17 में विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में SDGs का महत्व और भी बढ़ जाता है। ये लक्ष्य राज्यों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने, वैश्विक शासन को सुदृढ़ करने और साझा समस्याओं के समाधान के लिए एक समन्वित ढांचा प्रदान करते हैं। पारंपरिक रूप से जहाँ अंतरराष्ट्रीय संबंध शक्ति और प्रतिस्पर्धा पर आधारित रहे हैं, वहीं SDGs एक ऐसे दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं, जिसमें सहयोग, सह–अस्तित्व और सामूहिक हितों को प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रकार, SDGs अंतरराष्ट्रीय राजनीति को अधिक मानवीय और नैतिक दिशा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, SDGs का कार्यान्वयन केवल सरकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह बहु–हितधारक (Multi stakeholder) दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि सतत विकास एक साझा प्रयास है, जिसमें सभी को अपनी–अपनी भूमिका निभानी होती है।

अंततः, SDGs को केवल विकास के लक्ष्यों के रूप में नहीं, बल्कि एक वैश्विक दृष्टि के रूप में देखा जाना चाहिए, जो एक ऐसे विश्व की परिकल्पना करता है जहाँ आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संतुलन एक–दूसरे के पूरक हों। इस प्रकार, SDGs आधुनिक विश्व व्यवस्था के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में उभरते हैं, जो न केवल

वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी एक सुरक्षित और समृद्ध पृथ्वी सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" और SDGs का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय दार्शनिक परंपरा और समकालीन वैश्विक विकास विमर्श के बीच यदि किसी गहरे अंतर्संबंध की खोज की जाए, तो "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और सतत विकास लक्ष्य (SDGs) के बीच एक अत्यंत सशक्त वैचारिक समानता दृष्टिगोचर होती है। यद्यपि दोनों की उत्पत्ति, प्रकृति और अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न हैं एक प्राचीन आध्यात्मिक–दार्शनिक आदर्श है और दूसरा आधुनिक वैश्विक नीतिगत ढांचाकृफिर भी इनके मूल में निहित उद्देश्य व्यापक रूप से मानव कल्याण, समावेशिता और न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था की स्थापना ही है।

सबसे पहले यदि दोनों के मूल उद्देश्य की तुलना की जाए, तो "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का केंद्रीय भाव समस्त मानवता के सुख, स्वास्थ्य और कल्याण की कामना करना है। यह किसी विशेष समुदाय, राष्ट्र या वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि सार्वभौमिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार, United Nations द्वारा स्थापित SDGs भी Leave No One Behind" के सिद्धांत पर आधारित हैं, जो यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि विकास के लाभ सभी तक समान रूप से पहुँचें। इस प्रकार, दोनों ही दृष्टिकोण वैश्विक समावेशिता और सार्वभौमिक कल्याण को अपने केंद्र में रखते हैं।

दूसरे, समानता और सामाजिक न्याय के संदर्भ में भी दोनों के बीच गहरा साम्य दिखाई देता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक सुख तभी संभव है जब समाज के सभी वर्ग समान रूप से समृद्ध और संतुष्ट हों। यह विचार सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने और एक संतुलित समाज की स्थापना पर बल देता है। SDGs के अंतर्गत भी SDG 1 (गरीबी उन्मूलन) और SDG 10 (असमानता में कमी) जैसे लक्ष्य इसी सिद्धांत को व्यावहारिक रूप में लागू करने का प्रयास करते हैं। इस दृष्टि से, भारतीय दार्शनिक विचार और आधुनिक वैश्विक नीतियाँ एक ही दिशा में अग्रसर प्रतीत होती हैं।

तीसरे, शांति और स्थिरता के संदर्भ में भी दोनों अवधारणाएँ एक–दूसरे के पूरक हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का आदर्श न केवल व्यक्तिगत सुख की बात करता है, बल्कि एक ऐसे समाज की कल्पना करता है जहाँ संघर्ष, हिंसा और अन्याय का स्थान न हो। इसी प्रकार, SDG 16 शांति, न्याय और सशक्त संस्थाओं की स्थापना पर बल देता है, जो सतत विकास के लिए अनिवार्य माने जाते हैं। इस प्रकार, दोनों ही दृष्टिकोण यह स्वीकार करते हैं कि बिना शांति और न्याय के कोई भी विकास स्थायी नहीं हो सकता।

हालाँकि, इन समानताओं के बावजूद कुछ महत्वपूर्ण अंतर (Differences) भी विद्यमान हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" मूलतः एक आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धांत है, जो व्यक्ति के आंतरिक मूल्यों, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है। इसके विपरीत, SDGs एक व्यावहारिक और नीतिगत ढांचा (Policy Framework) हैं, जिन्हें विभिन्न देशों और संस्थाओं द्वारा योजनाओं, कार्यक्रमों और नीतियों के माध्यम से लागू किया जाता है। अर्थात, जहाँ "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक आदर्श (Ideal) प्रस्तुत करता है, वहीं SDGs उस आदर्श को प्राप्त करने के लिए ठोस कार्ययोजना

(Action Plan) प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, दोनों के कार्यान्वयन के स्तर में भी अंतर है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" व्यक्तिगत, सामाजिक और नैतिक स्तर पर परिवर्तन की अपेक्षा करता है, जबकि ेक्ळे का कार्यान्वयन मुख्यतः राज्य, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और नीति–निर्माताओं के माध्यम से होता है। फिर भी, यह कहना उचित होगा कि यदि ेक्ळे को सफलतापूर्वक लागू करना है, तो "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे नैतिक मूल्यों का आंतरिककरण आवश्यक है, क्योंकि केवल नीतियाँ ही पर्याप्त नहीं होतीं, बल्कि उनके पीछे एक सशक्त नैतिक दृष्टिकोण भी होना चाहिए। दार्शनिक दृष्टि से यह भी महत्वपूर्ण है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक नैतिक प्रेरणा (Moral Inspiration) प्रदान करता है, जबकि SDGs एक संस्थागत और नीतिगत संरचना (Institutional Structure) का निर्माण करते हैं। दोनों के बीच यह संबंध इस प्रकार समझा जा सकता है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" ेक्ळे का नैतिक आधार बन सकता है, जबकि ेक्ळे उस नैतिकता को व्यवहार में लागू करने का माध्यम प्रदान करते हैं।

अंततः, यह तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिक विचार और आधुनिक वैश्विक विकास एजेंडा परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" SDGs को एक गहरी नैतिक और दार्शनिक दिशा प्रदान करता है, जबकि SDGs इस आदर्श को व्यावहारिक रूप में साकार करने का मार्ग प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, दोनों का समन्वय एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था की स्थापना में सहायक हो सकता है, जो न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण, पर्यावरणीय रूप से संतुलित और नैतिक रूप से सुदृढ़ भी हो।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में महत्व

समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य में, जहाँ वैश्विक राजनीति लंबे समय तक शक्ति, प्रतिस्पर्धा और राष्ट्रीय हितों के इर्द–गिर्द संचालित होती रही है, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और सतत विकास लक्ष्य (SDGs) एक वैकल्पिक और अधिक मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। ये दोनों अवधारणाएँ मिलकर अंतरराष्ट्रीय राजनीति को केवल शक्ति–संतुलन के खेल से आगे बढ़ाकर एक ऐसे नैतिक और सहयोगात्मक ढांचे की ओर ले जाती हैं, जिसमें वैश्विक कल्याण, समानता और न्याय को केंद्रीय स्थान प्राप्त होता है।

सबसे पहले, वैश्विक शासन (Global Governancम) के संदर्भ में इनका महत्व अत्यंत स्पष्ट है। आज की दुनिया में जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ किसी एक देश की सीमाओं तक सीमित नहीं हैं। इनके समाधान के लिए बहुपक्षीय सहयोग और साझा नीतियों की आवश्यकता होती है। United Nation द्वारा प्रस्तुत SDGs इसी प्रकार के वैश्विक शासन का आधार प्रदान करते हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इस प्रक्रिया को एक नैतिक दिशा देता है, यह स्पष्ट करते हुए कि वैश्विक नीतियाँ केवल कुछ देशों के हितों के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए होनी चाहिए।

दूसरे, अंतरराष्ट्रीय सहयोग (International Cooperation) के क्षेत्र में भी इन अवधारणाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। पारंपरिक दृष्टिकोण में राष्ट्र अक्सर अपने हितों की रक्षा के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, किंतु SDGs और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" सहयोग, साझेदारी और पारस्परिक निर्भरता को बढ़ावा देते हैं। इस संदर्भ में वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा

विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाती है, जो यह संदेश देती है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। यह दृष्टिकोण देशों के बीच विश्वास और सहयोग को सुदृढ़ करता है, जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों की स्थिरता के लिए अनिवार्य है।

तीसरे, शांति और सुरक्षा (Peace and Security) के क्षेत्र में इनका योगदान उल्लेखनीय है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में स्थायी शांति तभी संभव है, जब न्याय, समानता और समावेशिता सुनिश्चित की जाए। SDGs का SDG 16 शांति, न्याय और सशक्त संस्थाओं की स्थापना पर बल देता है, जबकि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक ऐसे समाज की परिकल्पना करता है जहाँ किसी के साथ अन्याय न हो और सभी को सम्मानजनक जीवन प्राप्त हो। इस प्रकार, दोनों अवधारणाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण और संतुलित सामाजिक व्यवस्था का परिणाम है।

इसके अतिरिक्त, सॉफ्ट पावर (Soft Power) के संदर्भ में भी "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का विशेष महत्व है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सॉफ्ट पावर का अर्थ है किसी देश की सांस्कृतिक, वैचारिक और नैतिक शक्ति, जिसके माध्यम से वह अन्य देशों को प्रभावित करता है। भारत के लिए यह अवधारणा एक महत्वपूर्ण सॉफ्ट पावर संसाधन के रूप में कार्य करती है, जो उसकी वैश्विक छवि को एक शांतिप्रिय, सहयोगात्मक और नैतिक राष्ट्र के रूप में स्थापित करती है। SDGs के संदर्भ में भारत की सक्रिय भूमिका जैसे जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य और विकास सहयोगकृइस बात का उदाहरण है कि कैसे प्राचीन विचार आधुनिक कूटनीति को प्रभावित कर सकते हैं।

इसके साथ ही, मानव–केंद्रित अंतरराष्ट्रीय राजनीति (Human&Centric IR) की अवधारणा भी इन दोनों के माध्यम से सुदृढ़ होती है। पारंपरिक रूप से अंतरराष्ट्रीय संबंध राज्य–केंद्रित (State–centric) रहे हैं, जहाँ व्यक्ति और समाज के हितों को द्वितीयक स्थान प्राप्त होता था। किंतु ेक्ळे और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" दोनों ही मानव कल्याण को प्राथमिकता देते हैं। यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय राजनीति को अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण बनाता है, जहाँ विकास और सुरक्षा का अंतिम उद्देश्य मानव जीवन की गुणवत्ता को सुधारना होता है।

अंततः, इन दोनों अवधारणाओं का महत्व इस बात में निहित है कि ये अंतरराष्ट्रीय संबंधों को एक नैतिक और मानवीय दिशा प्रदान करती हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जहाँ एक नैतिक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है, वहीं SDGs उस प्रेरणा को व्यावहारिक रूप में लागू करने का वैश्विक ढांचा प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, दोनों का समन्वय एक ऐसी विश्व व्यवस्था की परिकल्पना करता है, जो शक्ति और प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग, समानता और साझा जिम्मेदारी पर आधारित हो।

इस दृष्टि से, यह कहा जा सकता है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और SDGs केवल सैद्धांतिक अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि वे अंतरराष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप को बदलने की क्षमता रखते हैं। ये एक ऐसे भविष्य की ओर संकेत करते हैं, जहाँ वैश्विक विकास केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रहकर, मानवता के समग्र कल्याण का माध्यम बन सके।

केस स्टडी

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में किसी भी दार्शनिक या वैचारिक अवधारणा की वास्तविक प्रासंगिकता तब स्पष्ट होती है, जब उसे व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का सिद्धांत, जो समस्त मानवता के कल्याण की वकालत करता है, केवल एक आदर्शवादी विचार नहीं है, बल्कि आधुनिक वैश्विक राजनीति में विभिन्न रूपों में परिलक्षित भी होता है।

विशेष रूप से भारत की विदेश नीति और वैश्विक मंचों पर उसकी सक्रिय भूमिका इस बात का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है कि कैसे प्राचीन भारतीय विचारधारा को समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में व्यवहारिक रूप दिया जा सकता है।

सबसे पहले, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (International Day of Yoga) को एक महत्वपूर्ण केस स्टडी के रूप में देखा जा सकता है। न्दपजमक छंजपवदे द्वारा 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया जाना भारत की सांस्कृतिक कूटनीति की एक बड़ी सफलता थी। योग, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन का प्रतीक है, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की भावना को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करता है। यह पहल ैक्ळ 3 (अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण) के साथ सीधे तौर पर जुड़ी हुई है, क्योंकि यह वैश्विक समुदाय को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार, योग दिवस केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि वैश्विक कल्याण के लिए भारत के योगदान का प्रतीक बन गया है।

दूसरे, वैक्सीन कूटनीति (Vaccine Diplomacy) भी "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के व्यावहारिक रूप का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। कोविड–19 महामारी के दौरान भारत ने Vaccine Maitri पहल के अंतर्गत कई देशों को टीके उपलब्ध कराए, विशेषकर विकासशील और गरीब देशों को। इस पहल का उद्देश्य केवल राष्ट्रीय हितों की पूर्ति नहीं था, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना भी था। यह दृष्टिकोण SDG 3 (स्वास्थ्य) और SDG 10 (असमानता में कमी) के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ यह स्पष्ट होता है कि भारत ने अपने संसाधनों का उपयोग वैश्विक समुदाय के हित में करते हुए "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की भावना को व्यवहार में उतारा।

तीसरे, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय कूटनीति के क्षेत्र में भी भारत की भूमिका इस अवधारणा को प्रतिबिंबित करती है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर Climate Justice और Common but Differentiated Responsibilities" जैसे सिद्धांतों का समर्थन किया है, जो यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि विकासशील देशों के हितों की अनदेखी न हो। इसके अतिरिक्त, International Solar Alliance (ISA) की स्थापना, जिसमें भारत ने अग्रणी भूमिका निभाई, सतत ऊर्जा के प्रसार और पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पहल SDG 7 (सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा) तथा SDG 13 (जलवायु कार्रवाई) के अनुरूप है और वैश्विक स्तर पर सामूहिक कल्याण की भावना को सुदृढ़ करती है।

इसके साथ ही, भारत की मानवीय सहायता और आपदा राहत (Humanitarian Assistance and Disaster Relief HADR) नीतियाँ भी "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के व्यावहारिक आयाम को दर्शाती हैं। चाहे नेपाल में भूकंप राहत कार्य हो, श्रीलंका या मालदीव में प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सहायता हो, या अन्य देशों में संकट के समय मदद प्रदान करनाकृ भारत ने बार–बार यह सिद्ध किया है कि उसकी विदेश नीति केवल रणनीतिक हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें मानवीय संवेदनशीलता भी निहित है। यह दृष्टिकोण SDG 16 (शांति और मजबूत संस्थाएँ) तथा SDG 17 (वैश्विक साझेदारी) के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" केवल एक सैद्धांतिक आदर्श नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्धांत है, जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भारत की नीतियों और पहलों को दिशा प्रदान करता है। यह अवधारणा भारत को एक ऐसे वैश्विक अभिनेता के रूप में स्थापित करती है, जो सहयोग, समावेशिता और साझा कल्याण को प्राथमिकता देता है।

अंततः, इन केस स्टडी के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जब प्राचीन दार्शनिक मूल्यों को आधुनिक नीतिगत ढाँचोंकृजैसे ॅक्लेकृके साथ जोड़ा जाता है, तो वे न केवल सैद्धांतिक रूप से प्रासंगिक रहते हैं, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी प्रभावी सिद्ध होते हैं। इस प्रकार, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक नैतिक आधार के रूप में उभरता है, जो वैश्विक सहयोग और सतत विकास को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चुनौतियां एवं सीमाएं

यद्यपि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और सतत विकास लक्ष्य (SDGs) दोनों ही एक आदर्श, समावेशी और न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं, तथापि इनके व्यावहारिक कार्यान्वयन के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ और सीमाएँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों को समझे बिना न तो इस अवधारणा की वास्तविक प्रासंगिकता का आकलन किया जा सकता है और न ही इसके प्रभावी अनुप्रयोग की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

सबसे पहली और प्रमुख चुनौती आदर्श और यथार्थ के बीच की खाई (Ideal vs Reality Gap) है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एक उच्च नैतिक आदर्श प्रस्तुत करता है, जिसमें सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की बात की जाती है, किन्तु वास्तविक अंतरराष्ट्रीय राजनीति अक्सर राष्ट्रीय हितों, शक्ति संतुलन और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा से संचालित होती है। इस परिप्रेक्ष्य में, राज्यों के लिए अपने सीमित संसाधनों और राजनीतिक प्राथमिकताओं के बीच वैश्विक कल्याण को प्राथमिकता देना एक जटिल कार्य बन जाता है। परिणामस्वरूप, यह आदर्श कई बार व्यवहारिक स्तर पर पूर्ण रूप से साकार नहीं हो पाता।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती राष्ट्रहित और वैश्विक हित के बीच टकराव है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्रत्येक राज्य अपने नागरिकों के हितों की रक्षा को सर्वोपरि मानता है। ऐसी स्थिति में, जब वैश्विक कल्याण के लिए कुछ त्याग या सहयोग की आवश्यकता होती है, तो कई बार राष्ट्र अपने हितों से समझौता करने में संकोच करते हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर विकसित और विकासशील देशों के बीच मतभेद इसी टकराव को दर्शाते हैं। इस प्रकार, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की सार्वभौमिक भावना और वास्तविक नीतिगत निर्णयों के बीच संतुलन स्थापित करना एक बड़ी चुनौती बन जाता है।

तीसरी चुनौती आर्थिक और सामाजिक असमानताओं से जुड़ी हुई है। वैश्विक स्तर पर देशों के बीच और देशों के भीतर गहरी असमानताएँ विद्यमान हैं, जो ॅक्ळे के लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करती हैं। SDG 1 (गरीबी उन्मूलन) और SDG 10 (असमानता में कमी) जैसे लक्ष्य इसी समस्या को संबोधित करते हैं, किन्तु संसाधनों की असमान उपलब्धता, तकनीकी विषमताएँ और विकास के असमान स्तर इन लक्ष्यों की प्राप्ति को कठिन बना देते हैं। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की अवधारणा जहाँ सभी के समान कल्याण की बात करती है, वहीं वास्तविकता में यह समानता स्थापित करना अत्यंत जटिल प्रक्रिया है।

इसके अतिरिक्त, राजनीतिक इच्छाशक्ति (Political Will) की कमी भी एक महत्वपूर्ण सीमा है। SDGs के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए देशों के बीच सहयोग, पारदर्शिता और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। किन्तु कई बार आंतरिक राजनीतिक परिस्थितियाँ, शासन की अस्थिरता राष्ट्रों के मध्य इस संबंध में कई चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और सतत विकास लक्ष्य (SDGs) के बीच एक गहरा और सार्थक वैचारिक संबंध विद्यमान है। जहाँ एक ओर "सर्वे भवन्तु सुखिनः" भारतीय दार्शनिक परंपरा में निहित एक सार्वभौमिक नैतिक आदर्श है, वहीं दूसरी ओर ैक्ळे समकालीन वैश्विक व्यवस्था में उसी आदर्श को व्यावहारिक रूप देने का एक संगठित प्रयास हैं। दोनों ही अवधारणाएँ मानवता के समग्र कल्याण, सामाजिक न्याय, समानता और सतत विकास को अपने केंद्र में रखती हैं।

इस शोध के विभिन्न आयामोंकृसैद्धांतिक विश्लेषण, दार्शनिक विवेचन, तुलनात्मक अध्ययन तथा केस स्टडीकृके माध्यम से यह स्थापित होता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में केवल शक्ति और राष्ट्रीय हितों पर आधारित दृष्टिकोण अब पर्याप्त नहीं रह गया है। 21वीं सदी की जटिल वैश्विक चुनौतियाँ एक ऐसे समन्वित और नैतिक दृष्टिकोण की मांग करती हैं, जिसमें सहयोग, सह–अस्तित्व और साझा उत्तरदायित्व को प्राथमिकता दी जाए। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इस संदर्भ में एक सशक्त नैतिक आधार प्रदान करता है, जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति को अधिक मानवीय और समावेशी दिशा में अग्रसर कर सकता है।

इसके साथ ही, United Nations द्वारा प्रस्तुत SDGs इस नैतिक दृष्टिकोण को एक ठोस नीतिगत ढांचे में परिवर्तित करते हैं, जो वैश्विक स्तर पर कार्यान्वयन योग्य है। SDGs की "किसी को पीछे न छोड़ना" की भावना, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के उस आदर्श को ही प्रतिबिंबित करती है, जिसमें सभी के सुख और कल्याण की कामना की जाती है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि SDGs और भारतीय दार्शनिक विचार परस्पर पूरक हैंकृएक नैतिक प्रेरणा प्रदान करता है और दूसरा उस प्रेरणा को व्यवहार में उतारने का मार्ग।

अंततः, यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सतत, न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था की स्थापना करनी है, तो केवल आर्थिक और राजनीतिक उपाय पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि इसके लिए एक गहरे नैतिक और सांस्कृतिक आधार की भी आवश्यकता होगी। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इसी प्रकार का एक सार्वभौमिक सिद्धांत है, जो आधुनिक वैश्विक शासन को एक नई दिशा देने की क्षमता रखता है।

इस अध्ययन के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और SDGs के समन्वय को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकते हैं।

सबसे पहले, यह आवश्यक है कि वैश्विक नीति–निर्माण में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाए। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में निर्णय प्रायः आर्थिक और रणनीतिक हितों पर आधारित होते हैं, किंतु यदि "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सिद्धांतों को नीति–निर्माण में शामिल किया जाए, तो विकास अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण बन सकता है।

इस दिशा में United Nations और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को एक व्यापक नैतिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

दूसरे, SDGs के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए समाज के सभी वर्गोंकृ नागरिक समाज, निजी क्षेत्र और शैक्षणिक संस्थानोंकृकी सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का आदर्श तभी साकार हो सकता है, जब यह केवल नीतियों तक सीमित न रहकर सामाजिक व्यवहार और व्यक्तिगत जीवन का भी हिस्सा बने। अतः शिक्षा और जन–जागरूकता के माध्यम से इस मूल्य को व्यापक स्तर पर प्रसारित किया जाना चाहिए।

तीसरे, भारत के संदर्भ में यह सुझाव दिया जा सकता है कि वह अपनी प्राचीन दार्शनिक विरासत को अपनी विदेश नीति और वैश्विक कूटनीति में और अधिक प्रभावी ढंग से समाहित करे। वसुधैव कुटुम्बकम् और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सिद्धांत भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करने के साथ–साथ वैश्विक मंचों पर उसकी नेतृत्व क्षमता को भी बढ़ा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय सहयोग को और अधिक मजबूत बनाने के लिए विकसित और विकासशील देशों के बीच विश्वास और साझेदारी को बढ़ाना आवश्यक है। SDG 17 के अंतर्गत वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, किंतु इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और पारदर्शिता भी आवश्यक है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का सिद्धांत इस सहयोग को एक नैतिक आधार प्रदान कर सकता है, जो राष्ट्रों के बीच आपसी विश्वास को सुदृढ़ करेगा।

अंततः, यह सुझाव दिया जा सकता है कि भविष्य के वैश्विक विकास एजेंडा में सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को अधिक स्थान दिया जाए। भारतीय दर्शन जैसे प्राचीन ज्ञान स्रोत आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए एक वैकल्पिक और समृद्ध दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। यदि इन्हें SDGs के साथ समन्वित किया जाए, तो एक अधिक संतुलित, समावेशी और सतत विश्व व्यवस्था की स्थापना संभव हो सकती है।

इस प्रकार, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और SDGs का समन्वय न केवल एक सैद्धांतिक संभावना है, बल्कि एक व्यावहारिक आवश्यकता भी है, जो वैश्विक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ सूची

1. United Nations. (2015). Transforming our world: The 2030 agenda for sustainable development (pp. 1–41). New York: United Nations.
2. United Nations. (2023). The Sustainable Development Goals Report 2023: Special edition (pp. 1–64). New York: United Nations Publications.
3. United Nations Development Programme (UNDP). (2020). Human development report 2020 (pp. 15–45). New York: UNDP.

4. United Nations Environment Programme (UNEP). (2021). Making peace with nature (pp. 10–78). Nairobi: UNEP.
5. Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD). (2023). Driving policy coherence for sustainable development (pp. 25–89). Paris: OECD Publishing.
6. World Bank. (2020). Poverty and shared prosperity 2020 (pp. 1–120). Washington, DC: World Bank.
7. Hazra, S., & Bhukta, A. (Eds.). (2020). Sustainable development goals: An Indian perspective (pp. 45–120). Singapore: Springer.
8. Dhar, S. (2018). Gender and sustainable development goals (SDGs). Indian Journal of Gender Studies, 25(1), 47–78.
9. Indana, F., & Pahlevi, R. W. (2023). A bibliometric approach to sustainable development goals (SDGs) systematic analysis. Cogent Business & Management, 10(2), 1–20.
10. Babbar, S. K., & Johannsdottir, L. (2024). India's ancient philosophy and its relevance for SDGs. Discover Sustainability, 5(51), 1–12.
11. Radhakrishnan, S. (1953). The principal Upanishads (pp. 25–80). London: George Allen & Unwin.
12. Sharma, A. (2000). Classical Hindu thought: An introduction (pp. 60–120). Oxford: Oxford University Press.
13. Sen, A. (1999). Development as freedom (pp. 35–110). New York: Alfred A. Knopf.
14. Nussbaum, M. (2011). Creating capabilities (pp. 18–75). Cambridge: Harvard University Press.
15. International Energy Agency. (2022). CO_2 emissions in 2022 (pp. 10–55). Paris: IEA Publications.
16. FAO. (2018). Global food security report (pp. 1–90). Rome: FAO.
17. UNICEF & WHO. (2020). State of the world's sanitation (pp. 20–85). New York: UNICEF.
18. UNESCO. (2020). World water development report (pp. 15–100). Paris: UNESCO.
19. International Union for Conservation of Nature (IUCN). (2023). Red list index report (pp. 5–40). Gland: IUCN

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*